लोरी के रूप में मां के मुंह से हुआ बाल साहित्य का उदय : दाश बेनहुर

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

हिन्दी संस्थान में साहित्य अकादमी ने सजाया बाल साहित्यकारों का मंच

अमृत विचार : साहित्य अकादमी दिल्ली के दो दिवसीय आयोजन के अंतिम दिन शुक्रवार को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के निराला सभागार में बाल साहित्यकारों ने बाल साहित्य लेखन के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर बात की। इस मौके पर पुरस्कृत लेखकों ने अनुभव साझा किये।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए ओड़िया विद्वान दाश बेनहुर ने कहा कि बाल साहित्य की शुरुआत 18वीं सदी में नहीं हुई। हकीकत तो यह है कि लोरी के रूप में मां के मुंह से बाल साहित्य का उदय हुआ है। आश्चर्य इस बात का है कि बाल साहित्य को नजरअंदाज किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि विडम्बना है कि प्रथम प्रधानमंत्री साहित्य अकादमी के पहले अध्यक्ष रहे लेकिन उनके समय में बाल साहित्य पुरस्कार नहीं शुरू हो पाये। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए लिखते समय मां की तरह सोचना चाहिए।

अजय कुमार शर्मा के संचालन में हुई संगोष्ठी में बांग्ला रचनाकार उल्लास मलिक ने बांग्ला बाल साहित्य के लेखन का हवाला देते हुए उसके इतिहास को सामने रखा। स्थानीय साहित्यकार जाकिर अली रजनीश ने कहा कि विज्ञान और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो बहुत सी बाल कहानियों ने नुकसान अधिक पहुंचाया है। अनंत कुशवाहा की कहानी, इंदरमन साहू की कहानी अधजले पांव, बांध के चूहे व प्यासा पुल, अरशद खान की कहानी पानी पानी रे व गुल्लक के अलावा अन्य कई उत्कृष्ट कहानियों की चर्चा करते हुए कहा कि हिन्दी बाल साहित्य अब भी उपदेश और नीति कथाओं के जाल में उलझा हुआ है।

मलयाली बाल साहित्य की समीक्षा करते हुए वर्ष 2012 में बाल साहित्य अवार्ड प्राप्त के श्रीकुमार ने कहा कि मलयाली बाल साहित्य के लिये भविष्य नई चुनौतियों से भरा है।

मराठी लेखिका सविता करंजकर ने दादी-नानी के कथा कहने की विधा को प्राचीन बाल साहित्य बताया। उन्होंने कहा कि मूल मराठी बाल साहित्य में श्यामची आई (श्याम की मां) कालातीत रचना है। फास्टर फेणे जैसे चरित्र की कहानियां मराठी में खूब पसंद की गयीं।

पुरस्कृत लेखकों ने साझा किए अनुभव

बाल साहित्य पुरस्कार 2024 से पुरस्कृत लेखकों ने "लेखक सम्मिलन" में अपने अनुभव श्रोताओं से साझा किये। अकादमी उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा की अध्यक्षता में लेखक सम्मिलन आयोजित किया गया। असमिया लेखक रंजू हाजरिका ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि बाल साहित्य पूरी दुनिया में एक सा ही है और उसका आधार वाचिक साहित्य है।

बांग्ला के लिए पुरस्कृत दीपान्विता राय ने कहा कि मैंने अपने बाल साहित्य को परी कथाओं से दूर रखकर वर्तमान समय की समस्याओं से जोड़ने का प्रयास किया है। डोगरी के लिए बाल साहित्य पुरस्कार प्राप्त बिशन सिंह दर्दी ने कहा कि मेरी पुरस्कृत बाल पुस्तक कुक्कड़ कड़ू का मतलब बच्चों को अपनी मातृभाषा डोगरी के प्रति जागृत करना है।

गुजराती लेखिका गिरा पिनाकिन भट्ट ने अपनी पुरस्कृत पुस्तक हंसती हवेली के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की। कन्नड़ लेखक कृष्णमूर्ति बिलगेरे ने बच्चों को स्वतंत्रता देना आवश्यक बताया। कोंकणी के लिए सम्मानित हर्षा सदगुरु शेट्ये ने कहा कि मेरी पुस्तक की मुख्य पात्र बायूल मैं ही हूं। यह मेरी ही कहानी है। मेरा बचपन गांव हो या शहर, बहुत ही समृद्ध रूप से बीता है। पचास साल पहले के गोवा का गांव मेरे उपन्यास में आया है।

मैथिली के लिए पुरस्कृत नारायण ने कहा कि मेरी पुस्तक एकाकीपन भोग रहे मिथिला के ऐसे वृद्धों पर है, जो अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए बच्चों से अधिक से अधिक घुल-मिलकर रहना चाहते हैं। मराठी लेखक भारत सासणे ने कहा कि रहस्य, रोमांच, साहस और जिज्ञासा आदि को लेकर किशोर मन में बड़ा कौतूहल रहता है। इसी को ध्यान में रखते हुए मैंने समशेर कुलूपघरे का प्रतिनिधि चरित्र बच्चों के लिए तैयार किया।

पंजाबी लेखक कुलदीप सिंह ने कहा कि मेरा पुरस्कृत नाटक मैं जलियांवाला बाग बोलदा हां जलियांवाला बाग के बहाने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के कई गुमनाम नायकों को रंगमंच के माध्यम से बच्चों के सामने प्रस्तुत करना है।